ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उद्धार में बांस की भूमिका

सुरेश प्रभु

प्राकृतिक और स्वदेशी कच्ची सामग्री के तौर पर बांस ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। यह कृषि और उद्योग, दोनों ही क्षेत्रों को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। यह पृथ्वी पर पर्यावरण के लिये सबसे ज्यादा अनुकूल पौधा है। यह कार्बन का सबसे ज्यादा पृथकीकरण करने वाली पादप प्रजातियों में से एक है। बांस तेजी से बढ़ कर कुछेक वर्षों में ही तैयार हो जाती है। यह कटाई के बाद फिर से बढ़ जाती है और इसे बार-बार रोपने की जरूरत नहीं पड़ती।

कोरोना वायरस की वैश्विक महामारी ने दुनिया की अर्थव्यवस्था पर कहर बरपा कर दिया है। भारतीय अर्थव्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रही है। सभी आर्थिक गतिविधियां बंद होने और मजदूरों की शहरों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर वापसी की वजह से लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था को दोहरा आघात पहुंचाया है। लॉकडाउन के कारण औद्योगिक, सेवा और कृषि क्षेत्र को जबर्दस्त नुकसान उठाना पड़ रहा है। इन उद्योगों को उत्पादन को कोविड से पहले के स्तर तक पहुंचाने में जो समय लगेगा उसे भी जोड़ लें तो आंकड़े विचलित करने वाले नजर आयेंगे।

ग्रामीण क्षेत्र पहले से ही बेरोजगारी और अल्परोजगारी की समस्या से जूझ रहे हैं। देश भर के शहरों तथा औद्योगिक और कृषि एवं बागवानी क्षेत्रों से ग्रामीणों के बड़े पैमाने पर गांवों की ओर पलायन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव काफी बढ़ा दिया है। सरकार ने गांव लौटने वाले मजदूरों की परेशानियों को घटाने के लिये कदम उठाये हैं। उसने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (एमजीएनआरईजीए) के तहत कामकाज का विस्तार किया है ताकि इन मजदूरों को कुछ काम मिल सके।

लेकिन गांव लौटने वाले इन मजदूरों में बड़ी संख्या कुशल और अर्द्धकुशल कामगारों की है। वे औद्योगिक इकाइयों, निर्माण उद्योग, आतिथ्य, प्रचालन तंत्र और खुदरा व्यापार जैसे सेवा क्षेत्रों तथा वाणिज्यिक कृषि और बागवानी में काम कर रहे थे। एमजीएनआरईजीए उन्हें अपने कौशल का इस्तेमाल कर आजीविका कमाने का अवसर मुहैया नहीं कराता। लिहाजा एमजीएनआरईजीए को इन मजदूरों की मदद के लिये आपातकालीन प्रावधान ही

लेखक जी-20 और जी-7 के लिये प्रधानमंत्री के शेरपा हैं। मौजूदा समय में राज्यसभा के सदस्य श्री प्रभु केन्द्र सरकार में कई मंत्रालयों का प्रभार संभाल चुके हैं।
ईमेल: sprabhu@sansad.nic.in

बांस: सांस्कृतिक संबंध

पेना एक तार वाला संगीत यंत्र है। इसके दो हिस्से होते हैं- पेनामासा या धोर और पेना चीजिंग या छोर। पेनामासा नारियल की खोपड़ी से जुड़ा बांस का एक टुकड़ा है। धनुष के आकार की पेना चीजिंग का इस्तेमाल तार पर घर्षण पैदा करने के लिये किया जाता है। पेना बजाने वाले को पेना अशीबा या पेना खोंगबा कहते हैं। वह वाद्य यंत्र को बजाते हुए गायन भी करता है। पेना मणिपुर के मेतेई समाज का अभिन्न अंग है। इसका वादन लाई हारौबा और लाई इकोबा जैसे पारंपरिक समारोहों के दौरान किया जाता है।

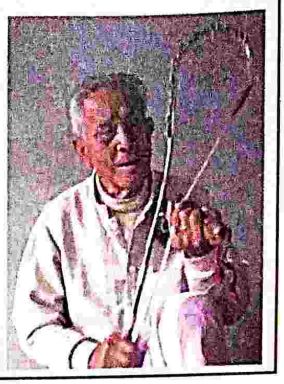

माना जा सकता है। वास्तव में अपने गांवों और कस्बों में रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं होने के कारण ही इन लोगों ने वहां से पलायन किया था।

वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चलता है कि नोवेल कोरोना वायरस से हमारा पीछा नहीं छूटना। विकास का हमारा मॉडल शहर केन्द्रित है। इसलिये जरूरी हो जाता है कि शहरों में इस वैश्विक महामारी पर जल्दी-से-जल्दी काबू पाया जाये ताकि अर्थव्यवस्था को खोला जा सके। विकास की शहर केन्द्रित और संघनित प्रकृति ने उच्च घनत्व वाले आर्थिक क्षेत्रों को जन्म दिया है। किफायती आवास और योजनाबद्ध शहरी विकास के अभाव में प्रवासी मजदूरों को भीड़भाड़ वाले और अस्वच्छ वातावरण में रहना पड़ता है। अक्सर उन्हें पानी और स्वच्छता की सुविधाएं भी नियमित तौर पर नहीं मिल पाती हैं। इस वैश्विक महामारी ने दिखा दिया है कि हमारी सरकारी और निजी स्वास्थ्य सेवा संरचना कोविड 19 के रोगियों की बढ़ती संख्या से निपटने के लिये तैयार नहीं है।

मजदूरों की गांव वापसी से देश भर के विकास क्षेत्रों में उद्योग, सेवा और वाणिज्यिक कृषि बुरी तरह प्रभावित हुई है। अर्थव्यवस्था को फिर से शुरू करने के लिये इन कुशल मजदूरों को विकास क्षेत्रों में वापस लाने की कोशिशें की जा रही हैं। एक सच यह भी है कि गांवों से बड़ी संख्या में पलायन की वजह से शहरी विकास क्षेत्रों में मजदूरों की संख्या जरूरत से ज्यादा हो गयी थी। इससे इन शहरी विकास क्षेत्रों में भी अल्परोजगारी और बेरोजगारी पैदा हो गयी थी। इसलिये इन अर्द्धकुशल और कुशल मजदूरों के इस अतिरिक्त बल को गांवों में ही रोकना भी आवश्यक है। इससे शहरी विकास केन्द्रों में आबादी का दबाव घटेगा और देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उद्धार के लिये हमारे गांवों में अर्द्धकुशल और कुशल कामगार उपलब्ध होंगे।

कोरोना वायरस से मुकाबले का यह समय लीक से हट कर सोचने और एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिये काम करने का अच्छा अवसर मुहैया कराता है। हमें याद रखना चाहिये कि प्राचीन समय में भारत एक मजबूत और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था था। औद्योगीकरण से पहले की भारतीय अर्थव्यवस्था एक जीवंत वैश्विक व्यापार का हिस्सा रही है जिसमें स्थानीय हस्तशिल्पियों के प्राकृतिक कच्चे माल से निर्मित उत्पादों की जबर्दस्त मांग थी। हमें भारत की इस महान आर्थिक विरासत से सबक लेकर वैश्विक व्यापार में अपनी पहुंच बढ़ाने के लिये काम करना चाहिये। आर्थिक प्रगति के इस परिवर्तित तरीके से हम संवहनीय विकास के रास्ते पर चल सकेंगे। इसके अलावा हम शमन और अनुकूलन की प्रक्रिया के जरिये जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने में भी सक्षम होंगे।

प्राकृतिक और स्वदेशी कच्ची सामग्री के तौर पर बांस ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। यह कृषि और उद्योग, दोनों ही क्षेत्रों को प्रभावित करने में सक्षम है। यह पृथ्वी का पर्यावरण के लिये सबसे ज्यादा अनुकूल पौधा है। यह कार्बन का सबसे ज्यादा पृथकीकरण करने वाली पादप प्रजातियों में से एक है। बांस तेजी से बढ़ कर कुछेक वर्षों में ही तैयार हो जाती है। यह कटाई के बाद फिर से बढ़ जाती है और इसे बार-बार रोपने

की जरूरत नहीं पड़ती। यह भूमि क्षय को नियंत्रित करने, भूजल का स्तर बढ़ाने और बेहद बंजर जमीन तक की उर्वरता में बढ़ोतरी के लिये बहुत ही प्रभावी प्राकृतिक साधन का काम करती है। इसलिये बांस परती भूमि की उर्वरता बहाल कर और वनों के संरक्षण के जरिये मरूस्थलीकरण से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

बांस हर साल भूमि पर छह से आठ इंच तक सड़ी पत्तियों की मिट्टी का इजाफा करती है। बांस का एक पौधा छह सीयूएम तक मिट्टी को जोड़ सकता है। बांस की ज्यादातर प्रजातियां एक सदाबहार छतरी बना कर समूचे साल पत्तियां गिराते हुए मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ाने में योगदान करती हैं। खेतों की सरहदों और खेती की जमीन पर लगा कर इसे कृषि से आसानी से जोड़ा जा सकता है। इसे परती और बंजर जमीन समेत गैरकृषि भूमि पर और बस्तियों में भी लगाया जाना मुमकिन है। बांस की कटाई साल में कभी भी की जा सकती है। लिहाजा अपेक्षाकृत अस्थिर कृषि से जुड़े किसानों को यह सालों भर आमदनी का एक ठोस और भरोसेमंद पूरक स्रोत मुहैया कराती है।

सुंदर और कई तरह के कामों में इस्तेमाल होने वाली घास प्रजाति की बांस फर्नीचर तथा घरेलू और सजावटी सामान के निर्माण में तेजी से लकड़ी का स्थान ले रही है। बांस की तन्यता की ताकत का इस्तेमाल निर्माण जैसे उद्योगों में इस्पात का इस्तेमाल घटाने में भी किया जा रहा है। इसमें निर्माण क्षेत्र में कार्यस्थल पर और उससे दूर काफी रोजगार पैदा करने की क्षमता है।

अंतरराष्ट्रीय बांस और रतन संगठन (आईएनबीएआर) एक बहुपक्षीय विकास संस्था है। यह बांस और रतन के इस्तेमाल से पर्यावरण के लिये संवहनीय विकास को बढ़ावा देता है। इसका अनूठा ढांचा इसे 46 सदस्य देशों का एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधि बनाता है। इसके 40 से ज्यादा सदस्य विकासशील विश्व से हैं। इसने पिछले दो दशकों में विकासशील देशों के बीच सहयोग बढ़ाने में खास तौर से बड़ी भूमिका निभायी है। आईएनबीएआर ने मानदंडों को बढ़ाने, बांस के जरिये सुरक्षित और मजबूत निर्माण को बढ़ावा देने, बंजर भूमि की उर्वरता में सुधार, क्षमता निर्माण तथा हरित नीति और संवहनीय विकास लक्ष्यों के

प्रचार में उपलब्धियां हासिल की हैं। इस तरह वह अपनी स्थापना के बाद से ही विश्व भर में लाखों लोगों की जिंदगियों और पर्यावरण में सही मायनों में सुधार लाता रहा है। मैं जब केन्द्रीय पर्यावरण और वन मंत्री था उसी दौरान 1998 में भारत ने आईएनबीएआर संधि पर दस्तखत किये।

मेरे मंत्रालय ने देश में बांस को बढ़ावा देने के लिये पहल की। मैंने 2004 में महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में अपने चुनाव क्षेत्र में कोंकण बांस और बेंत विकास केन्द्र (कोनबैक) नामक लाभ निरपेक्ष संस्था के गठन में मदद की। कोनबैक ने आईएनबीएआर के सहयोग से समावेशी हरित अर्थव्यवस्था के विकास के लिये महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में बांस को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित किया। उसकी महत्वपूर्ण रणनीतियों में बांस को गरीबों के लिये लकड़ी के भरोसेमंद विकल्प के रूप में स्थापित करने के मकसद से काम करना शामिल था। इससे ग्रामीण गरीबों और छोटे जोतदारों को 100 अरब अमेरिकी डॉलर से ज्यादा के काष्ठ उत्पाद बाजार में भाग लेने और इससे लाभ उठाने का मौका मिला। दूसरी महत्वपूर्ण रणनीति बांस के गैर-कृषि आर्थिक मूल्य और इसकी उपज से होने वाले पर्यावरणीय लाभ के अवसर के दोहन की थी।

कोनबैक भारत और विदेश में फर्नीचर और घरेलू इस्तेमाल के अन्य सामान बनाने के साथ ही समूचे इमारती ढांचे का पूरी तरह बांस से निर्माण भी करता है। पिछले 16 वर्षों में इसने बांस को गरीबों की लकड़ी के बजाय अमीरों की पसंद के रूप में स्थापित करने में सफलता हासिल की है। फर्नीचर और निर्माण उद्योग में इसका उपयोग उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी के विश्वसनीय विकल्प के तौर पर किया जाने लगा है। इससे पर्यावरण के प्रति सचेत समुदाय और अनूठापन चाहने वाले उपभोक्ताओं के लिये पसंदीदा सामग्री के रूप में बांस के महत्व में वृद्धि में मदद मिली है।

कोरोना वायरस से मुकाबले का यह समय लीक से हट कर सोचने और एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिये काम करने का अच्छा अवसर मुहैया कराता है। हमें याद रखना चाहिये कि प्राचीन समय में भारत एक मजबूत और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था था। औद्योगीकरण से पहले की भारतीय अर्थव्यवस्था एक जीवंत वैश्विक व्यापार का हिस्सा रही है जिसमें स्थानीय हस्तशिल्पियों के प्राकृतिक कच्चे माल से निर्मित उत्पादों की जबर्दस्त मांग थी। हमें भारत की इस महान आर्थिक विरासत से सबक लेकर वैश्विक व्यापार में अपनी पहुंच बढ़ाने के लिये काम करना चाहिये।

नाझू पर्व - नगालैंड

नगालैंड के फेक जिले में बसे मुलुओरी की पोचुरी नगा जनजाति का नाझू पर्व काबिले गौर है। एक छोटा-सा समूह इस पर्व को अब भी मनाता है। उसने अपने पूर्वजों के धर्म से जुड़ी अनुष्ठान की इस प्रथा को किसी तरह जीवित रखा है। नाझू का सबसे प्रतीकात्मक और अनूठा तत्व बांस के कुलदेवता अवूथरू को टांगा जाना है। अवूथरू एक लंबे बांस से टांगे गये विशाल विंड चाइम की तरह होता है। इस कुलदेवता को 20 और 24 फरवरी के बीच किसी दिन टांगा जाता है। लानिरी नेल के लिये कुलदेवता को 24 फरवरी को ऊपर किया जाता है और उसी दिन सभी औपचारिकताएं पूरी की जाती हैं। ■

कोनवैक ने अपना एक स्वत: संवहनीय सांस्थानिक पर्यावरण तंत्र विकसित कर लिया है। उसके पास स्वदेशी और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिये बांस उत्पादों की डिजाइनिंग, नमूना निर्माण और उत्पादन की पूरी तरह विकसित सुविधा है। उसने गरीब बांस उत्पादकों को बड़े लाभकारी बाजारों से जोड़ने का एक तंत्र बना लिया है। उसके मॉडल का अनुकरण भारत में अन्य स्थानों पर और विदेशों में भी किया जा रहा है। इन पहलकदमियों से पिछले 16 वर्षों में हजारों लोगों को आमदनी का स्रोत मिला है। इसने बांस के रोपन के जरिये पर्यावरण को हरा-भरा बनाने में भी योगदान किया है। कोनबैक का अनुभव बताता है कि बांस क्षेत्र में किसानों तथा ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को कृषि आधारित और गैरकृषि उद्यमों में अनुकरणीय उद्यमिता और रोजगार के अवसर मुहैया कराने की क्षमता है।

कृषि-औद्योगीकरण के लिये महत्वपूर्ण संचालक के रूप में बांस को बढ़ावा देने से जुड़ा एक अन्य पहलू भी है। यह उच्च प्रौद्योगिकी और आधारभूत संरचना पर निर्भर नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में बांस और स्थानीय मजदूर आसानी से उपलब्ध हैं। बांस क्षेत्रों को 'हब एंड स्पोक' मॉडल पर विकसित किया जा सकता है। इसमें प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल और उच्च कौशल वाली प्रक्रियाएं धुरी पर संचालित की जाएंगी। दूसरी ओर प्राथमिक प्रक्रियाओं का संचालन ग्रामीण स्तर पर होगा। उत्पादन के इस विकेन्द्रित मॉडल से देश भर में ग्रामीण समुदायों के लिये रोजगार के काफी अवसर पैदा हो सकते हैं।

हरा सोना के नाम से मशहूर इस मामूली-सी घास में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उद्धार करने की क्षमता है। यह जलवायु अनुकूलता के निर्माण और एक समावेशी हरित अर्थव्यवस्था के उत्प्रेरण के लिये एक महत्वपूर्ण संसाधन भी है। बांस के संवहनीय गुण संसाधनों के सतत इस्तेमाल के जरिये बर्बादी रोकने वाली वृत्तीय अर्थव्यवस्था पर आधुनिक नीतिगत बहस में महत्वपूर्ण हैं। वृत्तीय अर्थव्यवस्था में नवीकरणीय उत्पादों, सेवाओं और आपूर्ति शृंखलाओं की डिजाइन शामिल है। यह अर्थव्यवस्था नवीकरणीय ऊर्जा और संसाधनों पर आधारित है, कचरा पैदा नहीं करती तथा उत्पादों और सामग्रियों को ज्यादा-से-ज्यादा समय तक इस्तेमाल में रखती है। बांस ऐसी अर्थव्यवस्था की बुनियाद साबित हो सकती है। यह भारत के लिये एक समावेशी हरित अर्थव्यवस्था की ओर छलांग लगाने का अवसर मुहैया कराती है। ■